मनुष्य मत क्या है और ईश्वरीय मत क्या है, यह किताब अच्छा है। ईश्वर की मत क्या है, वह ईश्वर बताते हैं। गीता को तो खंडन किया हुआ है। यूँ भी ड्रामा में बच्चों के लिए सहज बहुत है। जैसे सरदार कहते हैं हमको ब्रह्मा और कृष्ण का सा॰ हुआ। मूल है ही यह। नारायण को कृष्ण ही कहेंगे। त्रिमूर्ति में भी यह है। शंकर को तो बाबा उड़ा देते हैं। यह सा॰ की भी ड्रामा में नूँध है। बहुतों को सा॰ होते हैं। ब्रह्मा के पास जाने से राजयोग की शिक्षा मिलेगी। कई तो झट आ जाते हैं। कई फिर घुटका खाते हैं। त्रिमूर्ति का चित्र तो सभी लिटरेचर में है ही। ब्रह्माकुमारियाँ मशहूर हो जावेंगी तो ज़रूर ब्रह्मा पास ही आवेंगे। उनके पास चलता ही है राजयोग। बहुतों को आगे यह मदद मिलेगी। ड्रामा में नूँध है। मूँझने की बात नहीं। आगे चल ना(म) तो बाला होना ही है। प्रजापिता तो मशहूर है। बहुत तुम्हारे पास आवेंगे। तुम जानते हो देवता घराणे में तो जाना ही है। कृष्ण बनने लिए तो बहुत पुरुषार्थ करना है। मदद तो हर प्रकार से मिलती है। हरेक बात सहज कर दी जाती है। शिवबाबा है। बाप आते ही हैं भारत में। भारत ही स्वर्ग था। त्रेता को भी आधा स्वर्ग कहेंगे। बहुतों को निश्चय होता जावेगा। तुम्हारी संस्था वृद्धि को पाती जावेगी। सन्यासी भी झुकेंगे तुम्हारे आगे। मुक्ति देने वाले तो बाप ही हैं और तुम हो उनके बच्चे। तुम्हारे पास आवेंगे तो उन्हों को रास्ता मिलेगा। खुदाई खिदमतगार तुम हो ना। स्थापना करने में तुम मदद करते हो। तुम्हारे द्वारा जो स्थापना हुई है वह गाई जाती है। इसलिए बड़े दिन आदि भी इस समय के मनाये जाते हैं। दशहरा, दीपमाला, होली, रखड़ी बंधन सभी इस समय की बातें हैं। सतयुग में उत्सव आदि होते ही नहीं। स्वर्ग तो स्वयं ही बड़े ते बड़ा उत्सव है। यहाँ उत्सव मनाते हैं। भक्त खुश होते हैं। वहाँ खुशी मनाने की बात नहीं होती। तुम बच्चों को तो खुशी ही खुशी है। यहाँ रंज है तब कुछ समय के लिए खुशी मिलती है। वहाँ तो तुम एवर हैपी रहते हो। जितना तुम आगे चलेंगे, देखते रहेंगे। सिर्फ पुरुषार्थ करना है पूरा। अभी टाइम वेस्ट करने का समय नहीं है। टूमच पैसा इकट्ठा करने में इतना बिज़ी रहते हैं जो फिर इस तरफ ध्यान देते ही नहीं। अबलाएँ गरीब निवाज़ दो मुट्ठी देते हैं तो 21 जन्म लिए जमा हो जाता है। उस लड़ाई आदि में कितना पद्मापदम खर्चा करते हैं। तुम बच्चे तो सच्चे पद्मापदमपति बनते हो। वह तो गंवाते हैं। तुम बिगर खर्चे कितना पदमभाग्यशाली बनते हो। इसलिए गरीब निवाज़ गाया हुआ है। साधारण रीति पढ़ते हैं, देखते हैं, धंधे आदि में समय गंवाते हैं, ऐसे थोड़े ही बाप चाहेंगे। कोई भी चिंतन की बात नहीं। ड्रामा में नूँध है। कल्प पहले भी दिया है इसी अनुसार पद भी पाया है। जो आप समान बनाते रहते हैं उनको ऊँच पद भी मिलता है। बाप आते हैं तो दुनिया भी चेंज होन.. ही है। बेहद के बाप का बनने से ही बुद्धि का ताला खुल जाता है। यहाँ बैठे हो तो भी सारा झाड़ बुद्धि में चक्र लगाता रहता है। चक्र फिरता रहता है ना। यह समय वेस्ट करने का नहीं है। गफलत से नापास हो पड़ते हैं। बेहद का बाप जानते हैं गरीबों की ही ऊँच तकदीर बनती है। यह बहुत भारी ऊँच लॉटरी है। कल्प-2 यह वर्सा लेना है। कल्प पहले भी लिया था। गरीबों को ही फुर्सत भी रहती है। साहूकार लोग तो कहेंगे फुर्सत नहीं। मरने का भी फुर्सत नहीं है। पैसे कमाने में ही मस्त रहते हैं। यह काम बड़ा दुश्मन है। बहुतों की रिपोर्ट इनके ही आते हैं। भगवानुवाच है काम महाशत्रु है। इस पर ही शुरू से लेकर झगड़ा चला आया है। बाप सिर्फ कहते थे भगवानुवाच काम को जीतने से जगत जीत बनेंगे। यह तो बहुत अच्छी रीत समझाना है। कोई अच्छी रीत समझ लेते। कई ज़ि(द्)दी भी आते हैं। यह तो निश्चय है हमारी विजय अवश्य है। श्रीमत पर श्रेष्ठ बन हम अपनी सतयुगी राजधानी स्थापन कर ही लेंगे। इस समय मनुष्य जो बोलते हैं वह पत्थर ही फेंकते हैं। तुम्हारे मुख से तो रत्न ही निकलनी चाहिए। एक-एक रत्न लाखों की वैल्यु का है। शास्त्रों के लिए ऐसे थोड़े ही कहेंगे। तुम महसूस करते हो। सन्यासी तो कहते हैं सुख काग विष्टा समान है। बाप समझाते हैं वह

ब्रह्म महातत्व तुम्हारा घर है। समझ से बैठ यह चित्र आदि निकाले हैं आत्माओं के लोक का। साइंस घमंडी कितने कोशिश करते हैं। अभी मून में रखा ही क्या है? साइंस पर तुम्हारी सायलेंस ही(की) जीत है। शांति के बल को ही योगबल कहा जाता है। योगबल से तुम विजय पाते हो। ज्ञान से फिर राज्य करते हो। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार राज्य करते हो। यह लिख दो सेकण्ड में बेहद के बाप से मुक्ति–जीवनमुक्ति। यह बातें सुन–सुनकर धारण करनी है। भूलना नहीं है। बाप को भूलने से राज्य गंवाया है। फिर बाप को याद करने से तुम राज्य पाते हो। यह बातें तुम जानते थोड़े ही थे। अभी तुम समझते हो, बहुत मीठे बनने वाले हैं तब तो सभी जाकर झुकते हैं देवताओं के आगे। यह मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ के आदि–मध्य–अंत को जानने से तुम सभी कुछ जान जाते हो। बहुत बड़ी पढ़ाई है और बहुत प्यार, प्रेम, रॉयल्टी से समझाना होता है, जो उनको कशिश हो। बाप अविनाशी है तो अविनाशी आत्मा को ही देखेंगे। विनाशी को देख क्या करेंगे! आत्मा ही सिर्फ अविनाशी है। यह भी समझ बड़ी अच्छी है। बच्चे समझते हैं अभी झाड़ जड़–जड़ीभूत अवस्था को पाया है। फिर नया ज़रूर बनना है। अच्छा, मीठे–2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बापदादा का याद प्यार गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।